सत्र V : इकाई 1

काव्य / साहित्य : स्वरुप, तत्त्व, प्रकार, प्रयोजन

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय-विवेचन

1.3.1 काव्य / साहित्य : स्वरुप

1.3.1.1 संस्कृत आचार्यो के काव्य-लक्षण

1.3.1.2 प्राचीन हिंदी आचार्यो के काव्य-लक्षण

1.3.1.3 आधुनिक हिंदी विद्वानों के काव्य-लक्षण

1.3.1.4 पाश्चात्त्य आचार्यों के काव्य-लक्षण

1.3.1.5 निष्कर्ष

1.3.2 काव्य / साहित्य : तत्त्व

1.3.2.1 भावतत्त्व

1.3.2.2 कल्पना तत्त्व

1.3.2.3 बुद्धि तत्त्व

1.3.2.4 शैली तत्त्व

1.3.2.5 निष्कर्ष

1.3.3 काव्य : प्रयोजन

1.3.3.1 संस्कृत आचार्य : काव्य-प्रयोजन

1.3.3.2 प्राचीन हिंदी आचार्य : काव्य-प्रयोजन

Scanned with CamScanner

1.3.3.3 आधुनिक हिंदी विद्वान : काव्य-प्रयोजन

1.3.3.4 पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य-प्रयोजन

1.3.3.5 निष्कर्ष

Scanned with CamScanner

1.2 प्रस्तावना :

काव्यशास्त्र को काव्यालोचन, काव्यमीमांसा, साहित्यशास्त्र तथा साहित्य सिद्धांत आदि नामों से भी पुकारा जाता है। काव्य का नियमन करनेवाले शास्त्र को काव्यशास्त्र कहा जाता है। दुनिया के सभी देशों में काव्यशास्त्र पर विचार हुआ है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से भारतीय तथा पाश्चात्य ऐसे दो भेद किए जाते हैं।

भारतीय काव्यशास्त्र का प्रारंभ सामान्यत: भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' से माना जाता है। कहा जाता है कि भारत वर्ष में भरतमुनि से पहले अनेक काव्यशास्त्री हुए हैं, किंतु उनके ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। इसलिए भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' का पहला नाम आता है। अत: भरतमुनि को ही साहित्यशास्त्र की स्थापना का श्रेय दिया जाता है।

संसार को संस्कार काव्य से प्राप्त होते हैं। संसार को वाणी देने का कार्य कवि करता है। जिस कवि के पास काव्यशास्त्र का सही ज्ञान होता है वही कवि सफलता हासिल करता है। आचार्य भरतमुनि से लेकर आधुनिक काव्यशास्त्र की परंपरा को स्थापना काल, नव अन्वेषण काल, संशोधन काल, पद्यानुवाद काल और नवोत्थान कालों में विभाजित कर सकते हैं। स्पष्ट है कि भारतीय काव्यशास्त्र आज अत्यन्त उन्नत तथा विकसित अवस्था में है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इतिहास को यूनानी परंपरा, रोमन युग, अधिकार युग, पुनर्जागरण युग, कलावाद और फ्रायड एवं युंग के प्रभाव का युग आदि भागों में विभाजित करते हैं।

डॉ. श्यामसुंदर दास लिखते हैं, ''काव्य शब्द का वही अर्थ है जो साहित्य शब्द का वास्तविक अर्थ है।'' प्राचीन भारतीय ग्रंथों में साहित्य के लिए 'वाङ्मय' शब्द का प्रयोग पाया जाता है। डॉ. बाबू गुलाबराय स्पष्ट कहते हैं, ''साहित्य शब्द अपने व्यापक अर्थ में सारे वाङ्मय का द्योतक है। 'काव्य' यह शब्द कवि से प्रचलित हुआ है और अंग्रेजी शब्द 'Poetry' का अनुवाद है। 'साहित्य' शब्द अंग्रेजी Letter से फिर Literature के रूप में प्रचलित हुआ है। संस्कृत काव्यशास्त्र में 'सहित्यस्य भाव : इति साहित्यम्' कहा है। साहित्य का अर्थ है- सहभाव अर्थात साथ रहना। शब्द और अर्थ का साहित्य में सहभाव होता है। मूलत: साहित्य शब्द काव्य का उत्तराधिकारी होते हुए भी आज अधिक व्यापक तथा समृद्ध एवं विकसित अर्थ का वाहक बना है।

काव्य में बुद्धि तत्त्व, कल्पना तत्त्व, भावतत्त्व और शैली तत्त्व का योगदान होता है। प्राचीन आचार्यों से लेकर अबतक के आचार्यों ने अपने-अपने विचारों के अनुसार काव्य के विभिन्न रूपों का उल्लेख किया है। बारीकी से विचार करे तो हर कर्म के पीछे प्रयोजन देखने को मिलता है। काल तथा विचार धारा के अनुसार प्रयोजन संबंधी विचार भी बदलते रहते हैं। स्पष्ट है कि कोई कवि निरुद्देश्य काव्य सृजन नहीं करता।

अपने पाठ्यक्रम में साहित्य का स्वरूप, तत्त्व, प्रकार और प्रयोजनों का समावेश किया गया है। अत: हम काव्य किसे कहते हैं? उसकी परिभाषा बनाने का प्रयास किन-किन विद्वानों ने किया हैं? काव्य के विभिन्न तत्त्व कौन से हैं? काव्य के प्रकार कौन से हैं? अलग-अलग विद्वानों ने काव्य के कौन से प्रयोजन बनाए हैं? आदि प्रश्नों की दृष्टि से प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करेंगे।

1.3 विषय विवेचन :

अब हम काव्य का स्वरूप, तत्त्व, प्रकार और प्रयोजनों पर विचार करेंगे।

Scanned with CamScanner

1.3.1 साहित्य / काव्य का स्वरूप :

वर्तमान युग में काव्य का प्रयोग पद्यात्मक रचनाओं के लिए रूढ हो गया है तथा साहित्य से सभी विधाओं का द्योतन होने लगा है। काव्यशास्त्र के अन्तर्गत काव्य और साहित्य एक दूसरे के समानार्थी समझे गए हैं। मनुष्य जीवन की तरह काव्य में भी निरंतर परिवर्तन हो रहा है। आचार्य राजशेखर ने काव्य को पन्द्रहवीं विधा माना है और बतलाया है कि काव्य चौदह विधाओं का आधार है। साहित्य शब्द अंग्रेजी के Literature के विकल्प के रूप में प्रचलित है। साहित्य शब्द का प्रचलन साहित्य के अर्थ में सातवीं आठवीं सदी से हुआ है। इसके पहले साहित्य के बदले 'काव्य' शब्द का प्रयोग होता था। राजशेखर, भामह, कुंतक और रुद्रट आदि विद्वानों ने साहित्य के लिए काव्य शब्द का प्रयोग किया है। काव्य और वाङ्मय के लिए आज सिर्फ साहित्य शब्द ही स्वीकार्य है।

सही अर्थों में कवि आनंद देता है। कवि की सृष्टि नियमबद्ध नहीं होती है। मानव की पहली रचना काव्य है। काव्य में कल्पना, भावना की रसमय तथा रमणीय अभिव्यक्ति होती है। काव्य जितना व्यापक है उतना सूक्ष्म भी। प्रारंभिक काल से आज तक काव्य का स्वरूप स्पष्ट करने तथा परिभाषाओं में बाँधने के अनेक प्रयास हुए, किंतु उसका उन्नत रूप लक्षणों और परिभाषाओं की सीमा से बाहर ही दिख पडता है। मनुष्य शिक्षित हो या निरक्षर काव्य की धारा उनके कंठ से निकलती ही है। दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है, जिस देश में काव्य ही नहीं है। दुर्भाग्यवश आज हम मन की काव्य संबंधी भूख को अन्य साधनों से पूर्ण कर रहे हैं। विज्ञान तथा ज्ञान की चकाचौंध की दुनिया में काव्य के अभाव में हमारा जीवन अधूरा-सा लगता है। आज हमने बुद्धि का प्रयोग करके चंद्रलोक तथा विभिन्न ग्रहों का रहस्य खोलने में सफलता हासिल की है। रेडिओ, दूरदर्शन, इंटरनेट, अणुशक्ति का काफी मात्रा में विकास हुआ है किंतु काव्य से मानव के भीतर की प्रेम की अनुभूति समझ में आती है।

काव्य मानव जीवन की निराशा की दशा में काम आता है। काव्य आदमी को जीने की नई दिशा देता है। साहित्य समाज को उदार तथा उदात्त बना देता है। बुद्धि तथा हृदय का समन्वय काव्य में होता है। असल में सत्यं, शिवं, सुंदरम् इन तीनों की सामंजस्यपूर्ण प्रतिष्ठा ही साहित्य की सफलता की पराकाष्ठा है। विश्वव्यापी एकता की भावना का विकास करने में काव्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। वह मानव के बाह्य और आंतरिक जगत् का वर्णन करता है। हम कुछ महत्त्वपूर्ण काव्य लक्षणों के विवेचन के द्वारा काव्य का स्वरूप स्पष्ट करना चाहते हैं।

1.3.1.1 संस्कृत आचार्यों के काव्य-लक्षण :

✸ आचार्य भरतमुनि :

आचार्य भरतमुनि संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। इस दृष्टि से देखे तो काव्य का लक्षण सर्वप्रथम काव्यशास्त्र का प्राचीनतम ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है। आचार्य भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में लिखा है-

"मुदुललितपदाढ्यं गूढशब्दार्थहीनम।
जनपदसुखबोध्यं युक्तिमन्नृत्ययोज्यम।
बहुरसकृतमार्गं सान्धिसन्धानयुक्तम।
स भवति शुभ काव्यं नाटक प्रेक्षकाणाम्।"

Scanned with CamScanner

अर्थात् जिसकी रचना कोमल एवं ललित पदों में की गयी हो, जिसमें गूढ़-शब्द-अर्थ का अभाव हो, जो जनसाधारण के लिए सुख-बोधक हो, जिसमें युक्तियुक्त ढंग से नृत्य आदि की योजना की गयी हो, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के रस स्वीकार किए गए हो और जिसमें कथानक सन्धियों का निर्वाह किया गया हो, नाटक के प्रेक्षक के लिए वही शुभ-काव्य होता है।

नि:संदेह भरतमुनि का काव्य-विवेचन व्यापक है। यह लक्षण दृश्य काव्य की दृष्टि से लिखा गया है।

✷ आचार्य भामह :

भरतमुनि के उपरांत काव्यशास्त्र के क्षेत्र में काव्यालंकार के रचयिता और अलंकार संप्रदाय के प्रवर्तक भामह का नाम आता है। उन्होंने काव्य के बारे में लिखा है -

''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।''

अर्थात शब्द और अर्थ का सहित भाव काव्य या साहित्य है।

प्रस्तुत काव्य की परिभाषा अत्यंत व्यापक है, क्योंकि इसके क्षेत्र में काव्य के अतिरिक्त शास्त्र, इतिहास और वार्तालाप आदि सभी आ जाते हैं। इसमें अतिव्याप्ति दोष के साथ-साथ काव्य के बाह्य स्वरूप का ही स्पष्टीकरण है। यह परिभाषा, उचित नहीं है।

✷ आचार्य विश्वनाथ :

'साहित्य दर्पण' के रचयिता और रस संप्रदाय के आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की परिभाषा दी है-

''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।''

अर्थात रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

आचार्य विश्वनाथ रसवादी होने के कारण रस को प्रमुखता दी है किंतु रस की सत्ता स्वीकार कर लेने के बाद अन्य सभी तत्त्व गौण हो जाते हैं।

✷ आचार्य रुद्रट :

'काव्यालंकार' में रुद्रट ने कांव्य की परिभाषा इस प्रकार दी है -

''ननु शब्दार्थौ काव्यम्।''

अर्थात वे शब्द और अर्थ के संबंध को ही काव्य मानते हैं।

प्रस्तुत परिभाषा में रुद्रट ने शब्द और अर्थ की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए चारुतापूर्ण शब्द और अर्थ के उपादान पर बल दिया है। यह परिभाषा अतिव्याप्ति दोष से युक्त है।

✷ आचार्य राजशेखर :

'काव्यमीमांसा' के रचयिता आचार्य राजशेखर साहित्य शब्द का प्रयोग 'काव्य' के अर्थ में करते हुए लिखते हैं-

Scanned with CamScanner

''शब्दार्थयो: यथावत् सहभावेन विधा साहित्यविद्या।''

अर्थात शब्द और अर्थ की यथायोग्य संगति से जो विधा या प्रकार बनता है, वह साहित्यविद्या कहलाता है।

इस परिभाषा में सिर्फ शब्दों के चुनाव को ही महत्त्व दिया गया है। इसमें अव्याप्ति दोष होने के कारण यह परिभाषा स्वीकार्य नहीं है।

✷ आचार्य मम्मट :

आचार्य मम्मट ने अपने 'काव्य प्रकाश' ग्रंथ में कविता का लक्षण इस प्रकार दिया है -

''तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुन: क्वापि।''

अर्थात दोष-विरहित, गुण-युक्त और कहीं कहीं अनलंकृत शब्दार्थ ही काव्य है।

मम्मट की परिभाशा में दो विशेषताएँ तो निषेधात्मक हैं और उनमें भी एक अनिश्चित। प्रस्तुत परिभाषा में प्रयुक्त 'अदोषौ' शब्द सार्थक नहीं है, क्योंकि सर्वथा निर्दोष रचना असंभव है। 'सगुण' शब्द भी काव्य की कोई महत्त्वपूर्ण विशेषता प्रकट नहीं करता, क्योंकि गुण बडा व्यापक अर्थ देनेवाला शब्द है। अत: यह लक्षण अस्पष्ट है।

✷ आचार्य पंडितराज जगन्नाथ :

आचार्य पंडितराज जगन्नाथ संस्कृत काव्यशास्त्र परंपरा के अंतिम आचार्य हैं। उन्होंने अपना काव्य लक्षण दिया है-.

''रमणीयार्थ प्रतिपादक : शब्द : काव्यम्।''

अर्थात रमणीय अर्थ प्रतिपादन करनेवाला शब्द ही काव्य है।

शब्द में सदैव अर्थ की रमणीयता होना असंभव है। अत: कुछ विद्वान शब्द की जगह वाक्य का प्रयोग करना चाहते हैं। यह लक्षण पर्याप्त सरल और सुबोध है।

1.3.1.2 प्राचीन हिंदी आचार्यों के काव्य-लक्षण :

संस्कृत के आचार्यों की तरह प्राचीन हिंदी आचार्यों ने काव्य/साहित्य का लक्षण बतलाने का प्रयास किया है, किंतु हमें यह मानना पडेगा कि हिंदी के सभी आचार्यो पर किसी न किसी प्रकार संस्कृत आचार्यों का प्रभाव दिखायी देता है।

✷ आचार्य कुलपति मिश्र :

आचार्य कुलपति मिश्र ने 'रस रहस्य' में मम्मट तथा विश्वनाथ दोनों के काव्य-लक्षण का खंडन करते हुए मौलिक उद्भावना की है -

''जगते अद्भुत सुख सदन, शब्दरू अर्थ कवित्त।
यह लच्छन मैंने कियो, समुझि ग्रंथ बहु चित्त॥''

अर्थात अलौकिक आनंद देनेवाले शब्द और अर्थ को काव्य कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

जगत् से विलक्षण आनंद कैसे समझा जाय, प्रश्न यह है। अत: लक्षण अस्पष्ट है। आचार्य कुलपति मिश्र की परिभाषा पर संस्कृत के आचार्य पंडितराज जगन्नाथ का प्रभाव दिखाई पडता है।

✸ आचार्य देव :

आचार्य देव ने अपने 'काव्य-रसायन' ग्रंथ में काव्य के स्वरूप को रूपायित करते हुए लिखा है -

"सब्द जीव तिहि अरथ मन, रसमय सुजस सरीर।
चलत वहै जुग छन्द गति, अलंकार गम्भीर॥"

अर्थात शब्द जीव है, अर्थ मन है, रसयुक्त सुयश शरीर है, वर्णिक-मार्मिक छंद उसकी गति है और अलंकार गति की गंभीरता के व्यंजक हैं।

महाकवि देव की धारणा विलक्षण है, जिसमें शब्द को शरीर न मानकर रस को शरीर माना गया है। गति की गम्भीरता भावों पर निर्भर करती है यह सर्वविदित है, किंतु देव ने अलंकारों में मानी है। अत: काव्य के स्वरूप को समझने में इससे कोई विशेष सहायता नहीं मिलती।

✸ आचार्य चिंतामणि :

आचार्य चिंतामणि ने 'कविकुल-कल्पतरु' में काव्य का जो लक्षण दिया है, वह इस प्रकार है -

"सगुन अलंकारन सहित, दोषरहित जो होई।
शब्द अर्थ वारी विबुध कहत सब कोई॥"

अर्थात गुणसहित, अलंकारसहित और दोष रहित अर्थपूर्ण शब्द-रचना को कविता कहते हैं।

यह परिभाशा आचार्य मम्मट के लक्षण की अपेक्षा हेमचन्द्र के लक्षण से अधिक साम्य रखती है। हेमचन्द्र ने अलंकार को अनिवार्य माना है। चिंतामणि ने भी अलंकार की अनिवार्यता पर विशेष बल दिया है।

✸ आचार्य श्रीपति :

इनके 'काव्य-सरोज' के अनुसार -

"शब्द अर्थ बिन दोष, गुण अलंकार रसवान।
ताको काव्य बखातिए, श्रीपति परम सुजान॥"

अर्थात दोष रहित, गुण, अलंकार और रसयुक्त रचना को काव्य कहो ऐसा श्रीपति सुजानों को कहते हैं।

प्रस्तुत परिभाषा पर संस्कृत आचार्य मम्मट का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। इस परिभाषा में प्रयुक्त 'बिन-दोष' शब्द निषेधात्मक है।

✸ आचार्य सोमनाथ :

आचार्य सोमनाथ ने काव्य का लक्षण देते हुए कहा है -

Scanned with CamScanner

''सगुन पदारथ दोष विनु, पिंगल मत अविरुद्ध।
भूषण जुत कवि कर्म जो, सो कवित्त कहि बुद्ध॥''

अर्थात सगुण पद से युक्त, दोषरहित, छंदशास्त्र से युक्त और अलंकार से परिपूर्ण ऐसा जो कवि -कर्म होता है, उसे कविता कहते हैं।

सोमनाथ एक ऐसे आचार्य हैं, जिन्होंने काव्य की परिभाषा में छंद का समावेश किया है। प्रस्तुत परिभाषा पर मम्मट का प्रभाव है।

✷ आचार्य भिखारीदास :

आचार्य भिखारीदास ने काव्य की परिभाषा इस प्रकार की है -

''रस कविता को अंग भूषण है, भूषण सकल।
गुणं सरुप और रंग, दूषण करै कुरुपता॥''

अर्थात रस ही कविता का मूल भूषण है। रस के साथ ही भूषण भी इसके लिए आवश्यक है। कविता गुणसहित हो, उसका ढंग अच्छा हो और वह दूषण से रहित हो; क्योंकि दूषण के कारण उसे कुरूपता आती है।

प्रस्तुत परिभाषा में भिखारीदास ने अनेक काव्यतत्त्व को इकट्ठा करने का प्रयास किया हे। अत: वह काव्य-लक्षण भी असमीचीत है।

1.3.1.3 आधुनिक हिंदी विद्वानों के काव्य-लक्षण :

आधुनिक हिंदी विद्वानों के काव्य-लक्षण देखने योग्य हैं। जिन्हें देखकर यह स्पष्ट होता है कि इनके काव्य-लक्षण अधिकांश मात्रा में संस्कृत तथा पाश्चात्य काव्य लक्षणों से प्रभावित हैं।

✷ आचार्य रामचंद्र शुक्ल :

हिंदी के मूर्धन्य समालोचक तथा निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने काव्य की परिभाषा इस प्रकार की है -

''जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।''

वे कविता का जन्म मुक्तावस्था में होता है ऐसा मानते हैं। स्पष्ट है कि काव्य का यह लक्षण पूर्ण तथा व्यापक नहीं है।

✷ महादेवी वर्मा :

सुश्री महादेवी वर्मा जी ने काव्य की परिभाषा देते हुए लिखा है -

''कविता कवि-विशेष की भावनाओं का चित्रण है और वह चित्रण इतना ठीक है कि उससे वैसी ही भावनाएँ किसी दूसरे के हृदय में अविर्भूत होती हैं।''

Scanned with CamScanner

यह परिभाषा सीमित है। इसमें बुद्धि तथा कल्पना तत्व की उपेक्षा की गई है।

✱ डॉ. श्यामसुंदर दास :

उन्होंने काव्य की परिभाषा देते हुए कहा है -

''काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनन्द व चमत्कार की सृष्टि करे।''

इस लक्षण में रस, ध्वनि और अलंकार को समाहित करने का प्रयास किया है।

✱ सुमित्रानंदन पंत :

छायावाद के सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत का कथन है -

''काव्य हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।''

प्रस्तुत परिभाषा में अस्पष्टता दिखाई देती है। परिपूर्ण क्षण किस वक्त को कहे, इसका स्पष्ट जवाब नहीं मिलता है।

✱ बाबू गुलाबराय :

आचार्य बाबू गुलाबराय ने लिखा है -

''कविता संसार के प्रति कवि की भाव-प्रधान किंतु शुद्ध वैयक्तिक संबंधों से युक्त मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढाँचे में ढली श्रेय का प्रेम रूप उद्घाटित करनेवाली प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।''

प्रस्तुत परिभाषा में भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों मतों का सार हैं।

1.3.1.4 पाश्चात्य विद्वानों के काव्य-लक्षण : (अंग्रेजी काव्य-लक्षण) :

पाश्चात्य विद्वानों ने भी भारतीयों के समान काव्य के सम्बंध में बहुत कुछ लिखा है। वे अन्य कलाओं के सदृश्य कविता को भी अनुकृत मानते हैं। पाश्चात्य काव्यशास्त्र के लक्षणों को हम सामान्यत: दो वर्गो में बाँट सकते हैं - 1) वस्तु-परक, 2) आत्म तत्वपरक। वस्तुपरक काव्य-लक्षण जो इसके बाह्य तत्त्व को दिखाने वाला है उनमें से प्लेटो, अरस्तु, ड्राइडन, जानसन, मैथ्यू आरनाल्ड हैं। आत्मपरक काव्य-लक्षण रोमांटिक कवियों तथा कवि आलोचकों ने प्रस्तुत किए हैं जिनमें वर्डस्वर्थ, कॉलरिज, शैली, ले हन्ट आदि के काव्यलक्षण उल्लेखनीय हैं।

1) एनसायक्लोपीडिया ब्रिटानिका (Encyclopaedia Britanika) :

इसे अंग्रेजी विश्वकोष में लिखा है -

"Poetry - art, work of the Poet."

अर्थात कविता का कार्य कलाकाव्य है।

Scanned with CamScanner

यह लक्षण अस्पष्ट है। पहले कवि को समझा जाय और तब उसके कार्य को काव्य कहा जाय। कवि के माध्यम से कविता की परिभाषा उचित और स्पष्ट नहीं।

2) ड्राइडन (Dryden) :

इनका विचार है -

"Poetry is articulate music."

अर्थात कविता सुस्पष्ट संगीत है।

यह परिभाषा सर्वत्र सत्य नहीं। संगीत, कविता का एक पक्ष है, परंतु संगीत तत्व काव्य का अनिवार्य अंग नहीं। इसके अतिरिक्त सभी कविताओं में संगीत नहीं रहता। अत: यह परिभाषा उपयुक्त नहीं। अव्याप्ति दोष से युक्त है।

3) कॉलरिज :

ये काव्य में भावनाओं की क्रमिक अभिव्यक्ति को सुंदर शब्दों द्वारा सजाने के पक्ष में हैं -

"Poetry is the best words in their best order."

अर्थात सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता है।

यहाँ प्रश्न यह है कि सर्वोत्तम शब्द कौन से हैं और उनका सर्वोत्तम क्रम क्या है? सबसे उत्तम अर्थ देने वाले शब्द स्वर्ग, सोना, पुष्प, सौंदर्य आदि उत्तम होने चाहिए। ऐसी दशा में मृत्यु, कीचड, नरक आदि शब्द बुरे होंगे और काव्य के क्षेत्र से उन्हें निकाल देना पडेगा। पर इन शब्दों और इनके पर्यायों का उत्तम काव्य में खूब व्यवहार होता है। शब्दों का कभी-कभी एक क्रम और कभी दूसरा क्रम काव्य की पंक्तियाँ बन जाता है। इसलिए यह लक्षण अस्पष्ट और भ्रामक है।

4) वर्डस्वर्थ (Wordsworth) :

वर्डस्वर्थ ने काव्य में कल्पना के स्थान पर भावना को महत्त्व दिया है।

"Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings, it takes its origin from emotions recollected in tranquillity."

अर्थात कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है, जिसका स्रोत शांति के समय में स्मृत मनोवेगों से फूटता है।

वर्डस्वर्थ की परिभाषा तथ्यपूर्ण है, क्योंकि **यह भावानुभूति और अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को स्पष्ट करती है।** इस लक्षण में भी आपत्ति उठाई जा सकती है। शांति के समय में सभी अपने मनोवेगों को स्मरण करते हैं और अपने प्रबल भावों को प्रकट भी करते हैं; क्या वह सब काव्य हो जाता है? यहाँ पर अभिव्यक्ति कला और उसके प्रभाव का उल्लेख नहीं है। हम अपने सुख-दु:खपूर्ण क्षणों का स्मरण कर हँसते हैं और रोते हैं, पर सभी का वह उल्लास और विलाप सदैव कविता नहीं बन जाता। कविता के लिए उस सहज अभिव्यक्ति में सौंदर्य, संयम और प्रभाव की आवश्यकता है; परंतु इसमें संदेह नहीं कि प्रतिभा और अभिव्यक्ति-कौशल से युक्त कवियों की काव्याभिव्यक्ति की

Scanned with CamScanner

प्रक्रिया यहाँ पर आवश्य स्पष्ट हुई है। मनोवगों के आवेग के समय काव्य की अभिव्यक्ति नहीं होती; वरन् मनोवेग जब अनुभूति और भाव बन जाते हैं तब कवि स्मरण करके प्रबलता से उठे हुए भावोद्रेक को प्रकट करता है, जो काव्य होता है। कहा भी गया है 'भाव स्मरण रस:'। भावों का स्मृत रूप आनंददायी होता है और उनकी प्रतिभासंपन्न कवि के द्वारा अभिव्यक्ति कविता बन जाती है।

5) शैली (Shelley) **:**

शैली ने सरस काव्य में करूणा को आवश्यक माना है। काव्य के लक्षण पर विचार करते हुए इन्होंने लिखा है

"Poetry is the record of the best and happiest moment of the happiest and best mind."

अर्थात सर्वसुखी और सर्वोत्तम मनों के सर्वोत्तम और सर्वाधिक सुखपूर्ण क्षणों का लेखा कविता है।

यहाँ पर शंका यह उठती है कि सबसे सुखी और सबसे उत्तम मनों को परखने की कसौटी क्या है? दूसरे उनके सर्वोत्तम और सबसे सुखी क्षण कौनसे हैं? उनका लेखा सदैव कविता होगी, यह संदिग्ध है। सूखपूर्ण क्षणों से अधिक काव्य के बीज तो विषादपूर्ण क्षणों में उगते हैं, जैसे कि स्वयं शैली के विचार हैं (Our sweetest song are those that tell of saddest thought.) कि **हमारे सबसे मधुर गान वे हैं जिनमें विषादपूर्ण भाव व्यक्त किये जाते हैं।** अत: ऊपर की परिभाषा भावुकतापूर्ण ही है। काव्य को लेखा कहना उचित नहीं, क्योंकि इससे कल्पना और भावना की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है तटस्थ लेखा नहीं। यदि हम सुखी क्षणों का लेखा ही काव्य मानें, तो करुणापूर्ण काव्य को कहाँ रखा जायेगा जिसके लिए भवभूति का आग्रह है - 'एको रस: करूण एवं निमित्तभेदात्'।

6) मैथ्यू आरनॉल्ड (Arnold) **:**

इन्होंने काव्य में कल्पना के स्थान पर जीवन और विचारात्मक व्याख्या को महत्त्व दिया है-

"Poetry is at bottom, a criticism of life."

अर्थात कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।

इस लक्षण में उत्तम काव्य की विशेषता स्पष्ट हुई है। परंतु यह कोई विशिष्ट लक्षण नहीं माना जा सकता। जीवन की समीक्षा साहित्य के और रूपों में भी हो सकती है, केवल कविता में ही नहीं, अत: यह आरनॉल्ड के निजी काव्यादर्श का संकेत करनेवाली उक्ति है, कविता की परिभाषा नहीं।

7) डॉक्टर जॉनसन (Dr. Johnson) **:**

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध लेखक डॉ. जानसन कविता को कला के रूप में स्वीकार करते हुए लिखते हैं-

"Poetry is the art of uniting pleasure with thruth by calling imagination to the help of reason."

अर्थात कविता वह कला है जो कल्पना की सहायता से युक्ति के द्वारा सत्य को आनंद से समन्वित करती है।

इस परिभाषा में डॉक्टर जॉनसन ने काव्य का प्रधान स्वरूप स्पष्ट किया है। सत्य के प्रकाशन में आनंद का समावेश, रमणीयता और रोचकता के गुण का संकेत करता है और कल्पना का तो इस प्रकार के कार्य में प्रमुख हाथ

Scanned with CamScanner

रहता ही है। युक्तिसंगत होना, सत्य के स्वरूप का आधार है। वास्तविकता का आभास और विश्वसनीयता, कविता के प्रभावशाली होने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। ऐसी दशा में डॉ. जॉनसन की धारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है; परंतु इसमें कविता के कलात्मक पक्ष पर अधिक जोर दिया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि, पाश्चात्य विद्वानों में प्रधान रूप से दो वर्ग दिखाई देते हैं - एक तो वे जो कविता को जीवन से अलग करके देखना चाहते हैं, दूसरे वे जो कविता को जीवन की ही अभिव्यक्ति या आलोचना मानते हैं। अत:संक्षेप में इन विद्वानों में हर एक ने अलग-अलग तत्त्व को काव्य में महत्त्वपूर्ण माना है। वास्तव में सुंदर काव्य वही होगा जिसमें सभी का सुंदर सामंजस्य विधान होगा।

1.3.1.5 निष्कर्ष :

वस्तुत: संस्कृत, हिंदी तथा पाश्चात्य विद्वानों ने काव्य के अंतरंग तथा बहिरंग तत्त्वों के आधार पर काव्य की परिभाषा करने का प्रयास किया है। सभी विद्वानों में एक नये विचार तथा धारणा प्रस्तुत करने की प्रबल इच्छा दिखाई देती है। हमें यह मानना ही पडेगा की विभिन्न परिभाषाएँ दोनों का परिमार्जन करती दिखायी देती हैं। सार रूप में काव्य अथवा साहित्य की परिभाषा इन शब्दों में की जा सकती है। ''हृदय और बुद्धि का सुंदर सामंजस्य जिसमें होता है, वह काव्य होता है।''

1.3.2 काव्य / साहित्य : तत्त्व :

पाश्चात्य विद्वान विचेंस्टर ने पाश्चात्य साहित्यशास्त्र में काव्य के मूल विधायक तत्त्वों का सर्वप्रथम उल्लेख किया था। भावतत्त्व, कल्पना तत्त्व, बुद्धि तत्त्व और शैली तत्त्व आदि को विचेंस्टर ने काव्य में चार तत्त्वों की सत्ता को माना है। हडसन भी इसी बात को स्वीकारते हैं। सही अर्थो में इन तत्त्वों के कारण काव्य या साहित्य को सौंदर्य प्राप्त होता है। भावतत्त्व काव्य की आत्मा है। बुद्धि तत्त्व काव्य में सत्य का प्रकाश लाता है। सौंदर्य दृष्टि उत्पन्न करने में कल्पना तत्त्व का योगदान सराहनीय है। शैली भाषा पर निर्धारित रहती है। भावना के अनुसार शैली में परिवर्तन होता है।

1.3.2.1 भाव तत्त्व (The Element of Emotion) :

काव्य के विधायक तत्त्वों में भाव तत्त्व सबसे अधिक प्रभाव उत्पन्न करनेवाला होता है। भाव संक्रामक होते हैं। भाव की तीव्रता अभिव्यक्ति की उद्दीपक है। भाव तत्त्व के अभाव से काव्य निष्प्राण एवं नीरस होता है। शब्द, अर्थ और कल्पना भाव को साकार रूप देते हैं। कवि की कल्पना का प्रेरक भाव है। भाव संगीतात्मकता का भी प्रेरक है। काव्य के निर्माण के मूल में कवि के हृदय का भाव ही कार्य करता है। मूलत: कवि संवेदनशील होने के कारण उनके हृदय में अनेक भाव जाग उठते हैं। इन तीव्र भावों से काव्य का जन्म होता है। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ ने भावों का योगदान स्पष्ट करते हुए लिखा है - ''काव्य प्रबल संवेदना का सहज उद्रेक है।'' भावों की सृष्टि कवि करता है, इसलिए कवि काव्य जगत् का विधाता है।

भारतीय आचार्यों ने रस का संबंध भावों से माना है। आचार्य विश्वनाथ ने काव्य में रस की प्रधानता बताते हुए लिखा - ''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।'' स्पष्ट है कि भावों के बिना रस नहीं और रस के बिना काव्य नहीं। आचार्य

Scanned with CamScanner

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने बताया है कि, ''अन्त:करण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।'' अन्त:करण की वृत्तियों का संबंध रसदशा अर्थात भावानात्मकता से है। काव्य में भाव जितने गहरे होते हैं उतना ही उसका असर गहरा होता है। काव्य में स्पष्टता, औचित्य विविधता और व्यापकता का आगमन भावों के कारण ही होता है। भाव तत्त्व साहित्य के सभी विधाओं में व्याप्त है। पाठकों के दिलो दिमाग पर भावों से युक्त काव्य गहरा असर करता है। उदाहरण के लिए निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

''आजा रे कागो, चुन-चुन खायो मेरा मास।
दो नयनन मत खायो, पिया मिलन की आस॥''

इन पंक्तियों में खून से लथपथ घायल युवती अपने प्रियतम की इच्छा व्यक्त करती है इन भाव भरी पंक्तियों से कोई भी पाठक लुब्ध हुए बिना नहीं रह सकता है।

भावों को इंद्रियातीत भाव या सामान्य भाव, प्रज्ञात्मक भाव या संचारी भाव और गुणात्मक या सौंदर्य बोध से संबंधित भाव आदि तीन भागों में विभाजित किया जाता है। काव्य का बड़ा व्यापक तत्त्व भाव है। यह पाठक तथा श्रोता का भी संस्कार करता है। काव्य में सरलता आने के लिए भावों में वैविध्य का होना भी आवश्यक है। भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र ग्रंथ में सभी प्रकार के भाव दो प्रमुख भागों में विभाजित किए हैं - 1) स्थायी भाव, 2) संचारी भाव। गीतिकाव्य में भावात्मकता अधिक दिखाई देती है। स्पष्ट है कि भावतत्त्व में 'शिव' की रक्षा होती है।

1.3.2.2 कल्पना तत्त्व (The Element of Imagination) :

कल्पना शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है - सृष्टि करना, सृजन करना। काव्य में रूप या सौंदर्य सृष्टि करनेवाली शक्ति कल्पना है। अंग्रेजी में कल्पना का पर्याय Imagination है और इसका निर्माण Image शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है - मानसिक बिम्ब या चित्र। काव्य में 'सुन्दरम की प्रतिष्ठा का श्रेय कल्पना तत्त्व को ही है। यह सच है कि कल्पना के द्वारा अतीत तथा भविष्य की वस्तुओं, दृश्यों का हम साक्षात्कार कर सकते हैं। इसी तत्त्व के महत्त्व को स्वीकार करते हुए पाश्चात्य विद्वान रस्किन ने लिखा है, ''कविता कल्पना के द्वारा मनोवेगों के लिए रमणीय क्षेत्र प्रस्तुत करती हैं'' कल्पना तत्त्व अमूर्त भाव को मूर्त रूप प्रदान करता है। शून्य या अज्ञात वस्तु को कवि कल्पना के सहारे आकार देता है। आचार्य रामचंद्र शुक्लजी ने कल्पना तत्त्व के बारे में बिल्कुल ठीक लिखा है, ''जो वस्तु हमसे अलग है, हम से दूर प्रतीत है, उसकी मूर्ति मन में लाकर उसके सामिप्य का अनुभव करना उपासना है। साहित्यवाले इसे भावना कहते हैं और आजकल के लोग कल्पना।''

कल्पना तीन प्रकार की मानी जाती है - उत्पादक, संयोजक और अवबोधक। जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी में मनोभावों का मानवीकरण किया है। अचेतन को सचेतन करने की बडी शक्ति कवि में कल्पना से मिलती है। नये संसार की रचना कवि अपने कल्पना के बलबुते पर ही करता है। नवीनता तथा रोचकता का आगमन काव्य में कल्पना के कारण ही होता है। हाँ, यह सही कहा गया है कि, जो न देखे रवि, वह देखे कवि। साहित्य लोचन ग्रंथ में डॉ. श्यामसुंदरदास लिखते हैं - ''विज्ञान में जो बुद्धि है, दर्शन में जो दृष्टि है, वही कविता में कल्पना है।''

कल्पना तत्त्व का महत्त्वपूर्ण काम मानव जीवन के अनेक दृश्यों को सम्मुख प्रस्तुत करना होता है। विचारों को

Scanned with CamScanner

उत्तेजित करने की शक्ति कल्पना में होती है। असल कल्पना का सामर्थ्य ही कवि की प्रतिभा है। कविवर बिहारी ने कल्पना के सहारे 'प्रिय से मिलने के लिए विरहिणी नायिका की आकुल व्याकुल स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया है-

''इत तै उत तैं इतै, छिनु न कहूँ ठहराति।
रूख न परति, चकरी भई फिरि आवति फिरि जाति।''

कवि की सृजन शक्ति कल्पना होती है और इसी के बल पर वह एक नई तथा चमत्कारिक दुनिया का पुनर्निर्माण कर सकता है। कवि साधारण घटनाओं को भी कल्पना का सहारा लेकर असाधारण बना देता है। कल्पना में रसात्मकता की प्रतिष्ठा होना महत्त्वपूर्ण होता है।

1.3.2.3 बुद्धि तत्त्व (The Element of Intellect) :

काव्य में भाव और कल्पना के बाद बुद्धि तत्त्व की महता है। इस तत्त्व में विचार की प्रधानता होती है। कवि अपनी रचना विशिष्ट मकसद हेतु लिखता है। वह उसके द्वारा अपने पाठकों को एक विशिष्ट संदेश देना चाहता है। इस विशिष्ट संदेश तथा मकसद के प्रतिपादन के हेतु वह काव्य के माध्यम से अपने विशिष्ट विचारों की अभिव्यक्ति करता है। ये विचार ही काव्य में बुद्धि तत्त्व कहलाते हैं। बुद्धि तत्त्व के कारण काव्य सुसंगत तथा प्रभावशाली बन जाता है। कल्पना और भाव को सत्य बनाने का काम बुद्धि तत्त्व का होता है। यह भी सही है कि काव्य में बुद्धि तत्त्व विशुद्ध रूप में नहीं होता। काव्य में बुद्धि तत्त्व के कारण औचित्य का आगमन होता है। यह सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है कि बुद्धि तत्त्व से हीन कोई भी वर्णन हास्यास्पद हो जाता है। संत तुलसीदास के शब्द-प्रयोगों के औचित्य और विचारपूर्णता पर न जाने कितनी व्याख्याएँ हुई हैं और बराबर हो रही हैं। बुद्धि तत्त्व साहित्यकार को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। भावना को सुचारू रूप से प्रस्तुत करना है तो बुद्धि तत्त्व महत्त्वपूर्ण है।

बुद्धि को विचार तत्त्व भी कहा जाता है। भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने विचार या बुद्धि तत्त्व को काव्य के महत्त्वपूर्ण तत्त्व के रूप में स्वीकारा है। यह नकारा नहीं जा सकता है कि काव्य में भाव की अधिकता होती है किंतु बुद्धि का भी काव्य में अपना अलग महत्त्व होता है। निबंध में बुद्धि तत्त्व की प्रधानता होती है। केवल आज के युग में ही नहीं प्राचीन काल से भारत और पाश्चात्य देशों में बुद्धि तत्त्व की चर्चा होती आयी है। काव्य में योग्य-अयोग्य का विवेक बुद्धि ही रखती है।

यह हमें मानना पडेगा कि काव्य का साहित्य में सिर्फ आनंद तथा शुद्ध मनोरंजन नहीं होता है, साथही साथ बुद्धि की भी प्रधानता होती है। बुद्धि-तत्त्व एक ऐसी बागडौर है, जो असंतुलित दौड को रोक देती है। कहा जाता है कि कहानी, नाटक, उपन्यास और निबंध में इस तत्त्व का होना शरीर में प्राण जैसा है।

1.3.2.4 शैली तत्त्व (The Element of Styple or Expression) :

भाव, कल्पना और बुद्धि तत्त्व साहित्य के भाव-पक्ष से संबंधित हैं, तो शैली तत्त्व का संबंध साहित्य के कलापक्ष से है। इसे काव्य का शरीर भी कहा जाता है। पाश्चात्य साहित्य में शैली तत्त्व को विशेष महत्त्व दिया है। अंग्रेजी में कहा जाता है 'Style is the man himself.' इसी प्रकार प्रत्येक कवि की अपनी एक विशिष्ट शैली होती

Scanned with CamScanner

है। शैली के आधार पर ही कवि की तीन अवस्थाएँ निर्धारित की गई हैं। 1) प्रारंभिक, 2) प्रयोग, 3) प्रौढ। शैली के आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के गुणों की आवश्यकता होती है। काव्य को सुंदर, रोचक और आकर्षक बनाने में शैली का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। भारतीय काव्यशास्त्र में शैली का समानार्थक शब्द रीति है। आचार्य वामन विशिष्ट पद रचना को रीति कहते हैं। काव्य में बुद्धि तत्त्व से सत्य और शिव की रक्षा होती है और कल्पना, भाव तथा शैली तत्त्व से सुन्दरम का निर्माण होता है।

सरस शैली, ललित शैली, क्लिष्ट शैली, मधुर शैली, उदात्त शैली और हास्यव्यंग्य शैली आदि वर्तमान युग में शैली के प्रमुख प्रकार माने जाते हैं।

1.3.2.5 निष्कर्ष :

कुल मिलाकर संक्षेप में हम इतना ही कह सकते हैं कि भाव तत्त्व, कल्पना तत्त्व, बुद्धि तत्त्व और शैली तत्त्व के संतुलित और समन्वित रूप से ही साहित्य की निर्मिति होती है। यह सच है कि किसी एक तत्त्व की उपेक्षा या किसी एक का आधिक्य काव्य के स्वरूप में बिगडाव कर सकता है।

1.3.3 काव्य : प्रयोजन :

बिना उद्देश्य से कोई कृति नहीं लिखी जाती है। मानव जीवन के सभी क्रिया-कलाप बिना उद्देश्य से नहीं होते हैं। काव्य-प्रणयन में कवि के जो उद्देश्य रहते हैं, वे ही काव्य-प्रयोजन कहलाते हैं। असल में साहित्य की चर्चा प्रयोजन के संदर्भ में करना सर्वथा उपयुक्त है। प्राचीन काल से पाश्चात्य तथा भारतीय साहित्य में काव्य के प्रयोजन को लेकर विशद विचार व्यक्त किए जाते रहे हैं। संस्कृत काल से ही काव्य के प्रयोजन या उद्देश्यों पर विचार होता आ रहा है। इसलिए काव्य के प्रयोजनों को संस्कृत आचार्यो के काव्य प्रयोजन, हिंदी आचार्यों के काव्य प्रयोजन और पाश्चात्य आचार्यों के काव्य प्रयोजन आदि तीन वर्गों में बांटा जा सकता है।

1.3.3.1 संस्कृत आचार्य : काव्य-प्रयोजन :

✷ आचार्य भरतमुनि :

सर्वप्रथम भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में नाटक के आधार पर काव्य-प्रयोजन का उल्लेख मिलता है। भरतमुनि के काल में नाटक और काव्य में भेद नहीं माना जाता था। स्पष्ट है कि वे प्रयोजन काव्य के लिए भी माने जाते हैं। उन्होंने लोकहित साधन को महत्त्व दिया है।

"धर्म्यं यशस्यमायुष्य हितं बुद्धिविवर्द्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद भविष्यति॥"

अर्थात भरतमुनि के अनुसार धर्म, यश, आयु, हितोपदेश, जनहित आदि नाट्य के प्रयोजन हैं।

✷ आर्चा वामन :

वामन के अनुसार काव्य के दो प्रयोजन हैं -

"काव्यं सद्दृष्टादृष्टार्थ प्रीतिकीर्ति हेतुत्त्वात।"

Scanned with CamScanner

वामन ने काव्य के दृष्ट एवं अदृष्ट दो ही प्रयोजन बतलाए हैं, जिन्हें प्रीति तथा कीर्ति नाम से जाना जाता है।

✸ आचार्य भामह :

अलंकारवादी भामह ने काव्य के एक साथ अनेक प्रयोजन स्वीकार किये हैं -

''धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं क्लासु च।
करोति प्रीतिं कीर्तिं च साधुकाव्य निबन्धम॥''

अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, कीर्ति और 'आनंद की उपलब्धि ही काव्य का प्रयोजन है। साथ ही कलाओं में कुशलता, कीर्ति और प्रीति भी इसके प्रयोजन है।

✸ आचार्य मम्मट :

आचार्य मम्मट ने काव्य का प्रयोजन बताते हुए पूर्ववती आचार्यों का अनुसरण किया है। साथ ही साथ अपनी मौलिकता का भी परिचय दिया है। आचार्य मम्मट ने 'काव्यप्रकाश' में 6 प्रयोजनों की विशद चर्चा की है -

''काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे। शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेश युजे॥''

अर्थात काव्य का प्रयोजन यशप्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अनिष्ट निवारण, अलौकिक आनंदानुभूति और कांतासम्मित उपदेश आदि है। मम्मट द्वारा उल्लेखित सर्वाधिक मान्य काव्य - प्रयोजनों पर संक्षेप में चर्चा करना आवश्यक है -

1) यश :

अधिकांश कवियों की रचनाएँ यश-कामना से लिखी जाती हैं। यश कवि की महत्त्वपूर्ण कामना है। मिल्टन भी यह स्वीकार करते हैं कि यश मानव की अंतिम और उदात्ततम कामना है। महाकवि कालिदास कवि कर्म जीवन में यश प्राप्ति की आकांक्षा रखता है, ऐसा माना जाता है। भर्तृहरी के मतानुसार कवि का भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है, किंतु जरामरण से रहित यश-शरीर अमर रहता है।

''जयन्ति ते सुकृतिनों रससिद्धा : कवीश्वराः।
नास्ति येणां यशः काये जरामरणज भयम॥''

स्वपक्ष और पर पक्ष आदि यश प्रयोजन के महत्त्वपूर्ण दो पक्ष हो सकते हैं। भवभूति और भास आदि कवियों ने काव्य रचना करके अपने यश का विस्तार किया है रीतिकाल के कवियों ने काव्य की सृष्टि का प्रयोजन अपने आश्रयदाताओं का गुणगान करना माना था।

2) अर्थ :

आधुनिक काल में ही नहीं प्राचीन काल में भी यह एक प्रधान प्रयोजन रहा है। लगभग सभी संस्कृत तथा हिंदी आचार्यों ने अर्थ को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। भूखे भजन न होय गोपाला की उक्ति सभी के लिए लागू पडती है।

Scanned with CamScanner

कवि इससे कैसे बच सकता है। रीतिकाल के कवि अपनी रचनाओं के द्वारा आश्रय दाताओं की प्रशंसा करते थे और धन प्राप्त करते थे। रीतिकाल में अर्थप्राप्त करना काव्य का मुख्य प्रयोजन था। आज भी किसी राजनीतिक दल प्रचार अपने काव्य द्वारा करता है। अफसोस की बात यह है कि अर्थ के बंधन में बंध साहित्यकार स्वतंत्र काव्य की रचना नहीं कर सकता है। आत्मा का हनन करके लिखा हुआ साहित्य मन को समाधान दे नहीं सकता है। कालजयी रचना बनना असंभव ही होगा।

जाहिर है कि कवि धावक ने 'रत्नावली' नाटिका की रचना कर अर्थ प्राप्ति की थी। बिहारी ने राजा जयसिंह से एक-एक दोहे के लिए एक एक अशर्फी ली थी। कहा जाता है कि अंग्रजी उपन्यासकार वाल्टर स्कॉटने ऋण से मुक्ति पाने के लिए उपन्यास की रचना की थी। उद्भट आदि आचार्य कवियों को प्रतिदिन लक्ष स्वर्ण मुद्राएँ मिला करती थीं। गौरव की बात है कि तुलसीदास और कुंभनदास आदि संत कवियों ने धन को ठुकराकर आदर्श स्थापित किया है।

3) व्यवहार ज्ञान :

मम्मट ने व्यवहार-ज्ञान की शिक्षा को भी काव्य का एक प्रयोजन माना है। काव्य सृजन से कवि और पाठक दोनों को लाभ होता है। वेद, शास्त्र या साहित्यिक विधाओं को पढकर एक वर्ग दूसरे वर्ग के व्यवहार को जानता है। गीत, संगीत, परंपरा, कला, व्यवहार, संस्कृति, शिक्षा, खेल, विज्ञान का ज्ञान भी साहित्य पढकर हो सकता है। सही गलत का ज्ञान भी समझाता है।

बिहारी, रहीम, गिरधर और महाकवि गोस्वामी तुलसीदास आदि कवियों ने आदर्श व्यवहार की शिक्षा दी है।

4) शिवेतरक्षतये :

शिवेतरक्षतये का अर्थ है अनिष्ट निवारण। इस प्रयोजन को संस्कृत, हिंदी आचार्यों ने मान्यता दी है। वैयक्तिक अनिष्ट निवारण के साथ साथ सामाजिक अनिष्ट निवारण हेतु भी काव्य लिखा जाता है। भक्तिकालीन कवि तुलसीदास के जीवन में बाहु की पीडा थी। अपनी बाहु की पीडा को समाप्त करने के लिए हनुमान की स्तुति में 'हनुमान बाहुक' काव्य ग्रंथ लिखा। पद्माकर कृत 'गंगा लहरी' की चर्चा भी इसी क्रम में की जा सकती है। मयूर कवि ने सूर्य से कोढ निवारण की प्रार्थना करते हुए 'सुर्यशतक' की रचना की। 'कुरुक्षेत्र' में रामधारी सिंह दिनकरजी ने शिवभावना की ही प्रतिष्ठापना की है। भीषण संहार के उपरान्त प्राप्त हुयी विजयश्री को दिनकर जी ने युधिष्ठिर के द्वारा पूर्णरुपेण तिरस्कृत कराया है। सामाजिक अनिष्ट निवारण से देशहित तथा समाजहित होता है। इसमें प्राचीन काल से आजतक की उपदेशात्मक, नीतियुक्त और राष्ट्रीय भावना का वर्णन होता है।

5) सद्यः परिनिर्वृत्तये :

सद्य का अर्थ है तुरन्त और परिनिर्वृत्तये का अर्थ है आनंद देना। रस रूपी आनंद मिलना काव्य का प्रयोजन है। विशेष बात है कि यह आनंद कवि तथा पाठक दोनों को मिलता है। साहित्य में यह प्रयोजन किसी न किसी रूप में आजतक चला आ रहा है। रस रूपी आनंद जीवन की वेदना तथा विषमता को हटाकर शांति के मनोराज्य की स्थापना करता है, उसे ही 'ब्रह्मास्वाद सहोदर' कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

6) कान्तासम्मित उपदेश :

कान्तासम्मित अर्थात प्रिया द्वारा मधुर शैली में कही गई बात या भेजा गया संदेश। आचार्य मम्मट का कहना है, कि उपदेश मधुर शैली में या मधुर भाषा में होना चाहिए। प्रिया के मधुर शब्दों का असर यथाशीघ्र होता है। प्रभु सम्मत, सहृदय सम्मत और कान्ता सम्मत आदि तीन प्रकार के वचनों का शास्त्र में वर्णन है। साहित्य एक ऐसा माध्यम है जो श्रोता या पाठक पर अपना प्रभाव डाल सकता है। सुंदर, कोमल और सरस भाषा साहित्य को रोचक बनाती है। कहा जाता है कि केशव के एक छंद ने बीरबल को प्रसन्न कर राजा इंद्रजीत सिंह पर किया गया जुर्माना पूर्णरुपेण माफ किया था। रीतिकाल के कवि बिहारी ने राजा जयसिंह को दोहा लिखकर भेजा था। बिहारी के इस एक दोहे ने राजा जयसिंह का जीवन बदल दिया था। बिहारी के दोहे का प्रभाव सर्वविदित है। यह दोहा इस प्रकार है -

''नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहीं विकास यहि काल।
अली कली ही सो बन्ध्यौ, आगे कौन हवाल।''

1.3.3.2 प्राचीन हिंदी आचार्य : काव्य प्रयोजन :

हिंदी कवियों ने अथवा हिंदी काव्याचार्यों ने अधिक मात्रा में संस्कृत के आचार्यों का ही अनुकरण किया है। हिंदी काव्यशास्त्र की परंपरा रीतिकाल से मानी जाती है।

✷ गोस्वामी तुलसीदास (स्वान्तः सुख) :

महाकवि तुलसीदास ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरितमानस' की रचना 'स्वान्तः सुख' के लिए की है। महात्मा तुलसीदास ने लिखा है -

''कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहं हित होई।।''

अर्थात कीर्ति, कविता और ऐश्वर्य-वैभव वही श्रेष्ठ है जो गंगा नदी के समान सब का हित करनेवाला हो। भावार्थ यह है कि तुलसीदास जी ने गंगा की पवित्रता तथा उपकारी भावना से जोडकर लोक-मंगल की स्थापना करना ही काव्य का प्रयोजन सिद्ध किया है।

✷ आचार्य कुलपति :

रीतिकालीन आचार्य कुलपति के शब्दों मं काव्य प्रयोजन इस प्रकार है -

''जस सम्पत्ति आनन्द अति दुरितन डारै खोई।
होत कवित ते चतुरई जगत राम बस होई।।''

अर्थात कुलपति के मतानुसार यश, धन, आनंद, अनिष्ट निवारण और व्यवहारज्ञान काव्य के प्रयोजन हैं।

1.3.4.3 आधुनिक हिंदी विद्वान : काव्य प्रयोजन :

हिंदी साहित्य में आधुनिक कवियों, आचार्यों तथा आलोचकों ने काव्य प्रयोजन पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। इनके काव्य प्रयोजनों पर संस्कृत आचार्यों का प्रभाव है।

Scanned with CamScanner

1) महावीर प्रसाद द्विवेदी : ज्ञान का विस्तार और मनोरंजन ही साहित्य का उद्देश्य है।

2) राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त :

"केवल मनोरंजन कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"

1.3.3.4 पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य प्रयोजन :

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में साहित्य और आलोचना का जो विवेचन-विश्लेषण हुआ है उसका आधार प्रयोजन ही रहा है। भारतीय विचारकों के मतानुसार काव्य को ब्रह्मानंद सहोदर कहा गया है, किंतु पाश्चात्य मान्यता के अनुसार काव्य का संबंध कभी आत्मा से जोडा है तो कभी समाज से। परिणाम स्वरूप पाश्चात्य काव्यशास्त्र के साथ साथ प्रयोजन संबंधी वाद-विवाद देखने को मिलते हैं।

पाश्चात्य विचारकों ने काव्य को कला के अंतर्गत मानकर कला के प्रयोजन की चर्चा की है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य के निम्नलिखित मुख्य प्रयोजन बताए गए हैं -

1) कला कला के लिए।
2) कला जीवन के लिए।
3) कला जीवन में प्रवेश के लिए।
4) कला जीवन से पलायन के लिएं।
5) कला मनोरंजन के लिए।
6) कला आनंद के लिए।
7) कला आत्मानुभूति के लिए।
8) कला सेवा के लिए।
9) कला विनोद के लिए।
10) कला सृजन की आवश्यकता पूर्ति के लिए।

इस समस्त वादों में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण वादों की चर्चा करना हम उचित मानते हैं।

✷ कला कला के लिए :

पाश्चात्य विद्वानों में सर्वाधिक प्रचलित मत है 'कला कला के लिए' इस मत के प्रमुख समर्थक आस्कर वाईल्ड, ए. सी. ब्रेडले और स्पिनगर्त आदि हैं। प्रमुख प्रचारक ब्रेडले का कहना है कि काव्य स्वयं तो अपना उद्देश्य है। काव्य का उद्देश्य न तो किसी आदर्श सिद्धान्त की स्थापना करना है और न उपदेश देना। काव्य के बाद साहित्यकार का जो आनंद प्राप्त होता है वही उसका उद्देश्य है। कवि या कलाकार का मुख्य उद्देश्य काव्य या कला की रचना करता है। अत: उनकी दृष्टि से कला कला के लिए ही है और किसी प्रयोजन के लिए नहीं है।

इन विचारकों के अनुसार कवि या कलाकार को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है। कला कला के लिए यह मत मानते हुए भी पाठक के विचारों से दूसरे प्रयोजन अपने आप आ जाते हैं। जब पाठक किसी भी साहित्य को पढता है तो उसे संतोष होना स्वाभाविक है। यह कहना भी गैर नहीं होगा कि पाठक को कोई प्रेरणा प्राप्त हो सकती है, कोई शिक्षा मिल सकती है तथा दु:खमय जीवन सुखमय हो सकता है। ऐसी स्थिति में जिसे कवि ने सिर्फ कला के दृष्टिकोन से रचा, वही पाठक या श्रोता के लिए अनेक प्रयोजनों से युक्त हो जाती है।

स्पिनगर्त के मतानुसार कला को नीति की कसौटी पर कसना तक अंध परंपरा है। वे कलावादी नीति को धर्म

Scanned with CamScanner

का विषय मानते हैं, कला का नहीं। कला का उद्देश्य वे अभिव्यक्ति मानते हैं। उपयोगिता के आधार पर कला को कसना गलत है। स्पिनगर्न मानते हैं, कला का उद्देश्य सौंदर्य सृष्टि करना ही होता है।

इस संबंध में सोचनीय बात है कि कला को कला का प्रमुख प्रयोजन माना जा सकता है, किंतु कला को कला का एक मात्र प्रयोजन मानने में कुछ आपत्ति हो सकती है। सौंदर्य के नाम पर समाज में व्याप्त विभिन्न प्रवृत्तियों की ओर ध्यान न देना गलत साबित हो सकता है। अत: कला कला के लिए सिद्धांत अपूर्ण लगता है।

✷ कला जीवन के लिए :

कला कला के लिए के विपरीत पाश्चात्य देशों में दूसरा मत प्रचलित है कि कला जीवन के लिए है। कला को सिर्फ कला के लिए ही मानना मानव जीवन से अलग करना है। कला मानव जीवन से जुडकर ही सार्थक होती है। शुरू से अंत तक काव्य और कला में मानव जीवन की झाँकी रहती है। सुंदर, स्वस्थ तथा उदात दृष्टिकोन काव्य के माध्यम से जीवन में आता है। कलाओं के बिना जीवन निस्सार है।

'कला जीवन के लिए' यह मत काफी प्रसिद्ध है। साहित्यिक मत के रूप में इसका प्रचार पाश्चात्य देशों में हुआ किंतु इस मत को सही प्रतिष्ठा भारत वर्ष में ही रही है। सॉक्रेटीस, प्लूटो, रस्कीन, टॉल्सटाय और मैथ्यू आरनॉल्ड आदि विद्वान इस पक्ष के समर्थक हैं। काव्य जब नैतिक भावनाओं की उपेक्षा करता है, तब जीवन की ही उपेक्षा करता है। रस्कीन के शब्दों में, ''हमारे लिए वही काव्य ग्राह्य हो सकता है, जिसमें मनुष्य का अधिक से अधिक हित विहित है।'' प्लेटो ने बिलकुल ठिक लिखा है, ''समाज के नैतिक विकास का भार कवियों पर होता है।'' सॉक्रेटिस तो वस्तु की उपयोगिता को ही उसका सौंदर्य मानता था। मैथ्यू आरनॉल्ड पाश्चात्य विद्वान ने काव्य कला को जीवन की आलोचना (Poetry is at bottom a criticism of life) कहकर 'कला जीवन के लिए' मत का ही समर्थन किया है।

✷ कला जीवन के पलयान के लिए :

वास्तविक जीवन से उबकर हम अधिक आकर्षक तथा सुंदर जीवन का दर्शन करने के लिए काव्य का सहारा लेते है। काव्य मनुष्य को कल्पना लोक में पहुँचा देता है। फल स्वरूप काव्य जीवन से पलयान की बजाय यदि उसे शांति के लिए कहां जाए तो अधिक समीचीन होगा ।

✷ कला आनंद के लिए :

यह मत लगभग सर्वमान्य है। होमर से लेकर आधुनिक विचारकों तक के लोगों ने कला के उद्देश्य को आनंद माना है। काव्य को इसी आनंददायी शक्ति के कारण 'ब्रह्मानंद सदोहर' की संज्ञा दी गयी है ज्यों उचित है। 'कला आनंद के लिए' इस मत को स्थापित करनेवालों में शिलर और शैले का नाम प्रमुख है। शिलर के अनुसार, ''आनंद समस्त कलाओं का लक्ष्य है। क्योंकि मानव-सुख से अधिक उदात्त और गंभीर अन्य कोई समस्या नहीं''

✷ कला सृजन की आवश्यकता पूर्ति के लिए :

काव्य रचना एक सृजनात्मक आवश्यकता है। जब काव्य का सृजन कवि के लिए मजबूरी बन जाता है तब सारे बंध को तोडकर वह लिखता है। यह तो एक स्वयंसिद्ध प्रयोजन है।

Scanned with CamScanner

1.3.3.5 निष्कर्ष :

उपर्युक्त काव्य प्रयोजन का विवेचन करने के पश्चात्य हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि साहित्य लिखते वक्त साहित्यकार के सम्मुख विशिष्ट प्रयोजन निश्चित होता है, जिसकी पूर्ति वह साहित्य के माध्यम से करता है। यह सच है कि सभी विद्वानों ने साहित्य को उच्च-कोटि की कला स्वीकार की है किंतु प्रयोजन की दृष्टि से उनमे मतभिन्नता पायी जाती है। विशेष बात यह है कि अपने देशकाल, युग-प्रवृत्तियों, रूचियों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप प्रयोजन भी बदलता रहता है। हमें यह मानना पडेगा कि केवल एक प्रयोजन से काव्य का सही स्वरूप स्पष्ट नहीं होता है। आज जितने काव्य प्रयोजन हैं वे एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि पूरक हैं।

Scanned with CamScanner